"कर्म ही पूजा है"

डॉ. अनिल शर्मा 'सरल', हिंदी प्रवक्ता
बी.एस.एम.इण्टर कॉलेज , रूड़की

हर व्यक्ति जीवन में सफल होना चाहता है । लेकिन सामान्यतः देखने में आता है कि अपनी त्रुटियों के कारण असफल हुआ व्यक्ति हतोत्साहित होकर अपने कर्म-पथ को छोड़कर बैठ जाता है । इस प्रकार का व्यक्ति अपने मन मे कुछ कुण्ठायें पाल लेता है और अपने आपको हीन अनुभव करने लगता है । समाज की दृष्टि में सफल होने के लिए यह आवश्यक है कि आप दरिद्रों के रूप में उसके सामने न आयें । अकेलापन, उपेक्षा और अवांछनीयता की अनुभूति सबसे बड़ी दरिद्रता है । इस दरिद्रता को दूर रखने के लिए हमें तेजस्वी होना चाहिए । तेजस्विता का परिचय मात्र किसी काम में जुटे रहने की सामर्थ्य से मिलता है । सफलता की कुंजी ही यह है कि हम कोई न कोई काम अपने हाथ में रखें और लोगों को यह कहने का अवसर प्रदान न करें कि हमारे पास कोई काम नहीं है अथवा काम के प्रति हमारी रूचि नहीं रही है ।

जो व्यक्ति जीवन-मूल्यों को कार्यान्वित करने के प्रति रूचि नहीं दिखाते हैं , वे ही वस्तुतः असफल व्यक्ति कहे जाते हैं । ये असफल व्यक्ति सामान्यतः पाँच प्रकार के होते हैं । यथा -

उदासीन व्यक्ति- ये व्यक्ति आलसी होते हैं । इनके हित में यदि कभी कोई सुझाव दिया जाता है तो वे ईर्ष्यालु भाव से केवल इतना भर कह देते हैं - इससे क्या लाभ ?

कायर व्यक्ति- इस तरह के व्यक्तियों का मन सदैव भयग्रस्त बना रहता है । ये व्यक्ति सदैव दोषारोपण एवं असफलता की आशंका से पीड़ित रहते हैं । हमसे यह कार्य न हो सका, तो कोई क्या कहेगा ? आदि क्षुद्र विचार इनके चित्त को उद्वेलित करते रहते हैं । वे कभी भी किसी प्रकार का जोखिम नहीं उठाना चाहते हैं ,अर्थात् वे सफलता का मूल्य चुकाने का साहस नहीं बटोर पाते हैं ।

दुर्बल व्यक्तित्व वाले व्यक्ति- वे व्यक्ति जिनकी इच्छा-शक्ति बहुत दुर्बल रहती है अर्थात् जिनका आत्मविश्वास क्षीण हो गया है । इस प्रकार के व्यक्ति लगन एवं निष्ठा के साथ किसी भी काम की सामर्थ्य से रहित हैं ।

आत्मतुष्ट व्यक्ति- वे व्यक्ति , जो कुछ इस समय है उसी को सर्वस्व मान बैठते हैं , आत्मतुष्ट व्यक्तियों की श्रेणी में आते हैं । ये लोग समझ लेते हैं कि उनकी प्रगति अथवा विकास के अवसर समाप्त हो गये हैं । ऐसे व्यक्तियों के लिए कहा जाता है कि उन्नति के लिए उत्सुक पुरूषार्थी यदि आत्मतुष्ट होता है तो उसका नाश हो जाता है ।

कार्य निष्पादन कराने में असमर्थ व्यक्ति- वे व्यक्ति जो स्वयं तो कार्य कर सकते हैं परन्तु व्यवस्थापक के रूप में अन्य व्यक्तियों से काम लेने में अक्षम होते हैं, इस श्रेणी में आते हैं । इस तरह के व्यक्ति अपने ऊपर अधिकाधिक उत्तरदायित्व अथवा कार्यभार ले लेते हैं । इस स्थिति में वे न तो स्वयं कार्य कर पाते हैं और न किसी दूसरे से करा पाते हैं ।

जीवन में अनवरत कार्य करते रहना ही सफलता का रहस्य है । इस रहस्य को वही जान सकता है जो निम्नलिखित त्रुटि-सिद्धान्त को समझ लेता है ।

1. रचनात्मक एवं सार्थक कार्य करते हुए किसी व्यक्ति के लिए यह सम्भव नहीं है कि वह कोई त्रुटि न करे , उससे कोई भूल-चूक अथवा गलती न हो अर्थात् अवश्य होती है।
2. हम यदि अपनी त्रुटियों को शिक्षा के रूप में ग्रहण करते हैं , तो वे अपने पथ पर अग्रसर होने में हमारी सहायता करेंगी , न कि हमारी मार्ग की बाधक बनेंगी ।
3. त्रुटियां हमें कार्य करने से पहले आवश्यक तैयारी करने का पाठ पढ़ाती हैं , क्योंकि अधिकांश गलतियों का कारण ज्ञानाभाव अथवा निपुणता में कमी हुआ करती है ।
4. पीछे देखने और कुछ न करने की अपेक्षा यह अधिक अच्छा है कि हम आगे देखें और गलती करें । अपने प्रयोगों के असफल होने पर प्रसिद्ध वैज्ञानिक एडीसन ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा था कि अब मुझे कम से कम एक और ऐसी चीज का ज्ञान हो गया, जिसको सम्पन्न नहीं किया जा सकता ।

तथ्य की बात यह है कि गलतियों से शिक्षा ग्रहण कर हम पुनः अपने कार्य में जुट जाएं। सफलता या असफलता बाद का विषय है , कार्य तो करना पड़ेगा ही । गीता में भगवान कृष्ण का उपदेश इसी नीति का समर्थन करता है - "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"।

एक शायर ने भी फरमाया है-

मंजिल मिले या ना मिले , इसका गम नहीं ।
मंजिल की जुस्तजू में , मेरा कारवाँ तो है ।।